www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

"कल्प-साधना"

अर्थात्

स्तर और स्थिति का परिवर्तन

—ब्रह्मवर्चस्

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कल्प साधना अर्थात स्तर और स्थिति का परिवर्तन

पशु प्रकृति का खिलोना है। पेट और प्रजनन यह दो भार ही उसके कधों पर लदे हैं। उसमें उसके शरीर और मन का काम मिलता है और जीवनकाल कटता है। प्राणियों और वनस्पतियों के उत्पादन और भरण का सन्तुलन बिठाये रहने के लिएवह जीवनधारियों को भूख और रति कर्म की पूर्ति में जुटाये रहती है ताकि सन्तुलन बना रहे और खेल चलता रहे। प्रयोजन तो प्रकृति का सधता है। वह सृष्टि क्रम चलाने के लिए उन प्राणि उपकरणों का प्रयोग करती रहती है।

इससे ऊंची स्थिति मनुष्य की है। उसके भीतर एक स्वतंत्र आत्मा है। आत्मा अर्थात् निजी चेतना, स्वेच्छा पूर्वक कुछ सोचना, बनने और करने की अकांक्षा। चूंकि उसकी पदवी सामान्य स्तर के पशु प्राणियों से ऊंची है इसलिए उसकी उमंग अभिलाषा भी ऐसी होती है जिसमें उसकी गरिमा और प्रतिभा को विकसित, समुन्नत होने का अवसर मिले। इसी मनःस्थिति को उमंग कहते हैं। उमंग अर्थात् पशु से ऊंचे स्तर की महत्वकांक्षा, आत्मा की विशिष्टता इसी में है। उसे तृप्ति तुष्टि और शांति इसी आधार पर मिलती है कि उसकी आकांक्षा का स्तर अपेक्षाकृत ऊचा रहे। भगवान ने उसे अन्य प्राणियों की तुलना में शरीर और वैभव भी ऐसा दिया है कि वह उत्कृष्टता की उमङ्गों को पूरा करने के लिए पराक्रम कर सके। पराक्रम अर्थात् आदर्शवादिता अपनाने और कार्यान्वित करने का साहस। आत्मा की यही विशेषता है उसके अन्तराल में यही महत्वाकांक्षा उमंगती रहती है कि उसे पशु प्राणियों से ऊंचे स्तर का कुछ सोचना, कुछ बनना और कुछ करना है। जिसमें यह उमंगें नहीं उठती, जो पेट प्रजनन की पशु प्रवृत्तियों के ही भव बंधनों में बंधा और उन्हीं गतिविधियों के कुचक्र में फँसा रहता है उसे नर पशु

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहते हैं। ऐसे लोगों की काया भर मनुष्य जैसी होती है। चेतना की दृष्टि से उन्हें पिछड़े प्राणियो में ही गिना जा सकता है। नर-वानर, वन मनुष्य आदि शब्द ऐसे ही लोगों के लिए प्रयुक्त होते हैं। वे पेट अर्थात् पैसा प्रजनन अर्थात् परिवार। इन दो की ही परिधि में सोचते और जो बन पड़ता है इसी निमित्त मरते खपते रहते हैं। आत्मिक उमंगों के साथ उनका कोई सीधा वास्ता नहीं होता। न उनसे उत्कृष्ट चिंतन बन पड़त है और न आदर्श अपनाने के लिए पौरूष उमंगता है।

इसे विडम्बना ही कहा जाना चाहिए कि मनुष्य शरीर धारियों में अधिकांश वाह्य दृष्टि से ही भिन्न दिखते हैं पर उसका अन्तःकरण इस प्रगतिशील पदवी पाने पर भी उसी पुराने अभ्यास के कोल्हू में जुता रहता है। उसे पेट प्रजनन भर की सूझती है। लोभ और मोह ही शिर पर सवार रहते हैं। वासना और तृष्णा से आगे बढ़ना बन ही नहीं पड़ता। वरिष्ठता प्राप्ति की आत्मिक आकांक्षा, उद्धत अहंकार के जाल जंजाल में फँस कर रह जाती है। सूर दुर्लभ-सृष्टा का अनुपम उपहार-प्राणिवर्ग में सर्वश्रेष्ठ समझा जाने वाला यह मनुष्य जन्म ऐसे ही दिन काटते व्यतीत हो जाता है। पात्रता का परीक्षण करने के लिए जिसे प्रतियोगिता में उतरना और अधिक ऊंची पदवी पाने का सुयोग मिलना था वह उसी व्यामोह भटकाव में बीत जाता है। इसी मूर्खता को माया कहा गया है। माया अर्थात् प्रगतिशील अवसर मिलने पर भी पिछड़ेपन को अपनाये रहना गरिमा के अनुरूप उमंग उभारने और छलांग लगाने में कृपणता बरतना।

मनुष्य जीवन में मिल सकने वाली उपलब्धियों को प्राप्त करने के लिये आवश्यक है कि उससे मानवी गरिमा का बोध हो। इसी को आत्म ज्ञान या आत्म साक्षात्कार कहते हैं। यह बन पड़े तो उसे सिंह शावक जैसा नया पराक्रम उभरे जो भेड़ों के झुण्डों में पलकर अपने को भी वही समझने लगा था। जब पानी में छवि दिखी और समर्थ सिंह के समतुल्य अपने को पाया तो छिटक कर अलग जा खड़ा हुआ और अपनी पूर्व मान्य-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ताओं और गतिविधियों में तत्काल कायाकल्प कर दिया। मनुष्य को कदाचित कभी ऐसे आत्म निरीक्षण और आत्म परिवर्तन का अवसर मिलता है जो उसे आत्मिक क्षेत्र का कायाकल्प कहते हैं। वह प्रचलित प्रवाह में बहने से स्पष्ट इनकार कर देते हैं। प्रचलन में पिछड़े लोगों का ही बाहुल्य है उनके परामर्श या अनुकरण से कोई भी व्यक्ति दलदल से उबर नहीं सकता। अभ्युदय के लिए उत्कृष्टता की पक्षधर श्रद्धा, दूरदर्शी विवेक वाली प्रज्ञा और आदर्शवादी पराक्रम कर सकने वाली निष्ठा का अवलम्बन लेना पड़ा है भावना क्षेत्र की इन तीनों विभूतियों को ही अलंकारिक भाषा में अमृत, पारस और कल्पवृक्ष कहते हैं। जिन्हें यह त्रिविध सुयोग मिल गया समझना चाहिए कि उसका सौभाग्य उदय हुआ। परमात्मा का दूसरा वरदान उतर पड़ा। पहला वरदान तो मनुष्य जन्म मिलना। दूसरा वरदान मानवोचित गरिमा का बोध होना और उसी स्तर की यह महत्वाकांक्षा उभारना है। आम आदमी को यह सब कहाँ मिलता है। उसे पेट प्रजनन के अतिरिक्त और कुछ सूझता ही नहीं। लोभ मोह और अहंकार का सन्निपात ही उस पर छाया रहता है और विक्षिप्तों जैसी स्थिति बनाये रखता है।

चारपाई के चार पायों की तरह मानवतास—मझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी के चार आधारों पर खड़ी है। इसमें से एक भी डगमगाने लगे तो संतुलन बिगड़ जायेगा और मनुष्य पतन-पराभव के गर्त में गिरेगा।

आत्म परिष्कार के तीन अवलम्बन हैं उपासना, साधना, अराधना। उपासना के लिए प्रज्ञा योग की विद्या अपने समय में अपने स्तर के लोगों के लिए सुगम एवं सर्वोत्तम है। साधना के लिए हर दिन कुछ समय एकान्त में बैठकर आत्म निरीक्षण, आत्म सुधार, आत्म निर्माण एवं आत्म विकास के लिए वर्तमान परिस्थितियों से तालमेल बिठाते हुए यह यह देखना चाहिए कि क्या परिवर्तन और क्या अभिवर्धन की गुंजायस है। अराधना का अर्थ है लोक मंगल। इस निमित्त नियमित रूप से कुछ समय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दान और अंशदान निकालना चाहिए। आज नव निर्माण के लिए महाकाल की प्रत्येक जागृत आत्मा में इसकी आशा अपेक्षा है।

स्तर और स्थिति को बदलने के लिए पतन को उत्थान में परिवर्तन करने के लिए कुछ अतिरिक्त पुरुषार्थ करना और उपक्रम अपनाना पड़ता है। इसी का नाम साधना है। भारतीय संस्कृति का द्विजत्व का उपनयन संस्कार का-दीक्षा का विधान है। यह विधि विधान एक ही प्रयोजन के लिए है कि धर्मानुष्ठान के साथ व्यक्ति को पशु प्रवृत्तियों से छुटकारा पाने और मानवी गरिमा के अनुरूप ढलने के लिए उत्तेजित उत्साहित किया जाय। द्विजत्व अर्थात् दूसरा जन्म। दूसरा जन्म अर्थात पशु प्रवृत्तियों के दल-दल से उत्कृष्टता अपनाने के लिए लगाई गयी-छलांग। यह सामान्य संस्कार प्रचलन की बात हुई। द्विजत्व अपनाने का—उद्देश्य और स्वरूप क्या हो सकता है यह चिन्तन उसी उपक्रम के सहारे उभारने का उपक्रम चलता रहा है। अब तो वह चिन्ह पूजा मात्र बनकर रह गया है।

दूसरा उपचार है साधना। साधना अर्थात् कच्ची धातु को पकाकर शुद्ध और खरा बनाना उसमें देवता को देवत्व की उपलब्धि को इष्ट माना जाता है। जप, ध्यान, अनुष्ठान, व्रत, तप, योग जैसे अनेक ऐसे साधन अपनाने पड़ते हैं जो अभ्यस्त ढर्रे के सर्वथा विपरीत होते हैं। इस बहिरंग तितीक्षा का उद्देश्य है आन्तरिक क्षेत्र में समुद्र मंथन जैसी स्थिति उत्पन्न कर लेना। मानवी गरिमा अपनाने के लिए, उमंगें उभारने के लिए यह साधनात्मक उपक्रम अपनाया जाता है। यदि वह उद्देश्य पूर्ण हो और संकल्प पूर्वक तथ्य के साथ तन्मय रहा जा सके तो लक्ष्य की प्राप्ति होती है। लक्ष्य अर्थात पशु प्रवृत्ति का परित्याग करके देव परम्परा अपनाने का अडिग निश्चय। यही काया कल्प है। कल्प साधना यही है। उसमें शारीरिक क्रिया-कृत्यों के सहारे अन्तरंग की गहराई तक प्रवेश किया जाता है और अभ्यस्त ढर्रे में समाये हुए उलटेपन को उलट कर सीधा किया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाता है । नदी के प्रवाह में हाथी बहते जाते हैं । पर मछली धार को चीरता—छरछराती हुई उलटी दिशा में बह सकने में अपनी विशिष्टता का परिचय देती है । ऐसा ही निर्धारण बन पड़े तो समझना चाहिए कि साधक को सिद्धि मिल गई ओर साधना-तपश्चर्या पूर्ण हो गई । कल्प साधना से इसी मनः स्थिति को प्राप्त करना लक्ष्य है ।

पशु के मनुष्य बनने की साधना में जो भी विधि-विधान अपनाये जाते है उन सबके साथ एक ही लक्ष्य जुड़ा हुआ है कि अभ्यस्त ढर्रा बदलें । मानवी गरिमा के अनुरूप अपने चिंतन, चरित्र एवम् व्यवहार को ढालने का अवसर मिले। इसके लिए अभ्यस्त मान्यताओं, आकांक्षाओं, विचारणाओं एवम् गतिविधियों में असाधारण परिवर्तन करना पड़ता है । अन्तरंग में परिवर्तन होने पर ही बाह्य जीवन में वरिष्ठता की पक्षधर गतिविधियाँ अपनाने की अदम्य उमंगें उभरती हैं । ऐसी महत्वाकाँक्षायें उमङ्गतीं हैं जो देवत्व की दिशा में उछाले । सर्वसाधारण में चल रहे प्रचलन से इस निर्माण में भारी अन्तर होता है । इसलिए स्वभावतः दुनियादारी की दृष्टि में ऐसा व्यक्ति व्यंग्य, उपहास सहता और विरोध, असहयोग का भाजन बनता है । इस स्थिति को सहन करना ही साधना की परिपक्वकता की अग्नि परीक्षा जैसा प्रथम परीक्षण है ।

साधना से तपस्वी-बनना होता है । तपस्वी, मनस्वी, ओजस्वी और तेजस्वी होते हैं । वे अपनी आत्मा की पुकार सुनते, उसी से प्रेरणा और प्रकाश प्राप्त करते हैं : फलतः लोग क्या करते हैं । यह देखने की उसे फुरसत नहीं होती । ईमान और भगवान के प्रकाश में वह अपनी गतिविधियों को सुधारने; सम्भालने और बदलने में जुट जाता है । महामानवों में से प्रत्येक को यही करना पड़ता है । नर से नारायण बनने का, क्षुद्र से महान बनने का, साधना को सिद्धि स्तर तक पहुँचाने का यही एक मात्र मार्ग है ।

देव मानवों में से प्रत्येक को औसत नागरिक निर्वाह का प्रथम निश्चय करना पड़ा है । परिवार को छोटा रखने, उसे स्वावलम्बी सुसं-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्कारी बनने भर से सन्तुष्ट होना पड़ता है। सांसारिक बड़प्पन पाने की लिप्सा को कुचलना और उसके स्थान पर महानता उपलब्ध करने का नया निश्चय करना पड़ता है। यह तीन निश्चय कर गुजरने वाला ही सिद्ध पुरुष है। उसी की साधना सफल मानी जाती है। यह ब्राह्मण परम्परा है। इसे अपनाने वाला गुण कर्म स्वभाव को भी तेजी से बदल लेता है। उसमें शालीनता का समावेश होने में देर नहीं लगती। चिन्तन से उत्कृष्टता आते ही चरित्र में आदर्शवादिता और व्यवहार में सेवा साधना का त्रिवेणी संगम दृष्टि गोचर होने लगता है। यही है देवत्व की उपलब्धि।

इन उपलब्धियों का उपयोग कहाँ है? यह एक बड़ा प्रश्न चिन्ह है। आम आदमी अपने समय, श्रम, कौशल एवम् साधना का उपयोग लिप्साओं की पूर्ति में गंवाते रहते हैं किन्तु महामानव उनका नियोजन मात्र विश्व उद्यान को समुन्नत बनाने में करते हैं। एक शब्द में उसी को लोक मानस का परिष्कार और सत्प्रवृत्ति संवर्धन कहते हैं। ब्राह्मण अर्थात आदर्शवादी। साधु अर्थात सेवा परायण। ब्राह्मण को साधु बनाना होता है। अर्थात आदर्शवादी के लिए एक ही लक्ष्य बनता है कि वह विराट ब्रह्म की-जन साधारण की सेवा साधना के लिए अपने आप को विसर्जित करदे। भावी जीवन की विधि व्यवस्था, योजना एवम् दिशाधारा ऐसी बनाये जिसमें आत्म कल्याण और विश्व कल्याण के दोनों प्रयोजन समान रूप से सधते हों। आत्म संतोष, लोक सम्मान और दैवी अनुग्रह के त्रिविध विभूतियों का हाथों हाथ मिलने का सुयोग हस्तगत होता हो।

देवता को फुसलाने के लिए घुमाने, धूपबत्ती जलाने या व्रत तितिक्षा के सहारे दुराग्रह पूर्ति के लिए धरना देने की विडम्बना में कोई दम नहीं। अध्यात्म में जादूगरी, बाजीगरी जैसी कोई जीच नहीं। उसमें चित्र विचित्र दृश्य दिखाने या करामातें दिखाने की तनिक भी गुन्जाइश नहीं है। अनधिकार उपहार पाने की अनैतिक आकांक्षायें ही मनोकामना के नाम से जानी जाती हैं। ऐसी दुरभिसंधियों को देवता भक्ति-भावना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समझने लगें और उतने भर से कुबेर का खजाना और इन्द्र का वैभव उड़ेलने लगें ऐसी आशा किसी को भी नहीं करनी चाहिए। आज तक ऐसे कुचक्री मनोरथ किसी के भी पूरे नहीं हुए। देवता और सिद्ध पुरुष जिस पर प्रसन्न होते हैं उसे महामानव बनाते हैं। जो देव मानव के अनुरूप अपने चिंतन चरित्र और व्यवहार का गठन कर सका वह आत्मा की प्रसन्नता, जनसमाज की श्रद्धा और ईश्वर की अनुकम्पा का असीम लाभ उठाता है। साधना से सिद्धि इसी को कहते हैं। सिद्ध पुरुष स्वयं पार होते और असंख्यों को अपनी नाव पर बिठाकर पार करते हैं।

पशुत्व से देवत्व में प्रवेश करने की मध्यवर्ती स्थिति का नाम मानवी गरिमा की उपलब्धि है। इस प्रयोजन के प्राप्ति के समय एक विशेष उमंग उभरती है कि पिछले दिनों जो अनौचित्य अपनाया जाता रहा है उसके कारण किए गये संग्रह का विसर्जन, प्रायश्चित्य रूप में कर दिया जाय। जो कमाया है उसे कुटुम्बी, सम्बन्धियों को गुलछर्रे उड़ाने के लिए खिसका देना और स्वयं माला घुमाने का भजनानन्दी आडम्बर ओढ़ लेना भी आत्मा और परमात्मा को संतोष नहीं दे सकता। यहाँ भी ईमानदारी का तकाजा आ पड़ता है कि अब तक की गतिविधियों में मानवी गरीमा से भिन्न प्रकार का जो उपार्जन संग्रह होता रहा है उसे भी उस उद्देश्य के लिए समर्पित कर दिया जाय जिसे अपना लक्ष्य माना है। ईश्वर की सच्ची भक्ति में आदर्शों के समुच्य परमात्मा में अपने आप को घुला देना जितना आवश्यक है उतना ही यह भी उचित है कि संग्रह को सम्बन्धियों की मुफ्तखोरी के लिए न देकर उसके चरणों में अर्पित किया जाय जिसका कि आश्रय लेने और शरणागत होने का सच्चे मन से निश्चय किया है। यहाँ भी स्मरण रखना होगा कि परमात्मा आदर्शों के समुच्य को कहते है। यह उसका वास्तविक स्वरूप है। उसे कोई व्यक्ति विशेष मानने की भूल किसी को भी नहीं करनी चाहिए।

प्रका० मुद्रक :– युगान्तर चेतना प्रेस, शान्ति कुञ्ज हरिद्वार। मू० ४० पैसे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org